

Monday	1	8	15
Tuesday	2	9	16
Wednesday	3	10	17
Thursday	4	11	18
Friday	5	12	19
Saturday	6	13	20
Sunday	7	14	21

JANUARY 18

28

Day 028-337 Wk-04  
SUNDAY

डि.ए. II Hindi Home.

आधुनिक काल की साहित्यिक एवं सामाजिक परिवर्तन  
डॉ. स्वर्णी - यू.ई. पाठिका

जैसा कि पूर्व में बताया गया है कि विपरीत की कविता वीनिशालीन काल की प्रतिक्रिया में लिखी जा रही थी जिसमें वह प्रकार की सुझाव, आलोचना और समालोचना सहित आता था। किन्तु उस के विकास की दृष्टि से यह काल महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। उदाहरण के तौर पर भारतीयों के विकास संबंध आरंभ हो चुका था। पूर्व में ही आर्य-वृद्धि (वृद्धि) में महत्त्वपूर्ण कर दी थी कि -

'आर्य-वृद्धि का सर्वोत्तम साधन सत्य गायी पर सब ध्यान विवेक - यही बात रही।'

आर्य-वृद्धि के काल में आर्य-वृद्धि के विकास में आर्य-वृद्धि का महत्त्व निम्नलिखित कारणों से है -

1. आर्य-वृद्धि के काल में आर्य-वृद्धि के विकास में आर्य-वृद्धि का महत्त्व निम्नलिखित कारणों से है -

2. आर्य-वृद्धि के काल में आर्य-वृद्धि के विकास में आर्य-वृद्धि का महत्त्व निम्नलिखित कारणों से है -

3. आर्य-वृद्धि के काल में आर्य-वृद्धि के विकास में आर्य-वृद्धि का महत्त्व निम्नलिखित कारणों से है -

4. आर्य-वृद्धि के काल में आर्य-वृद्धि के विकास में आर्य-वृद्धि का महत्त्व निम्नलिखित कारणों से है -

5. आर्य-वृद्धि के काल में आर्य-वृद्धि के विकास में आर्य-वृद्धि का महत्त्व निम्नलिखित कारणों से है -

6. आर्य-वृद्धि के काल में आर्य-वृद्धि के विकास में आर्य-वृद्धि का महत्त्व निम्नलिखित कारणों से है -

7. आर्य-वृद्धि के काल में आर्य-वृद्धि के विकास में आर्य-वृद्धि का महत्त्व निम्नलिखित कारणों से है -

8. आर्य-वृद्धि के काल में आर्य-वृद्धि के विकास में आर्य-वृद्धि का महत्त्व निम्नलिखित कारणों से है -

9. आर्य-वृद्धि के काल में आर्य-वृद्धि के विकास में आर्य-वृद्धि का महत्त्व निम्नलिखित कारणों से है -

10. आर्य-वृद्धि के काल में आर्य-वृद्धि के विकास में आर्य-वृद्धि का महत्त्व निम्नलिखित कारणों से है -

आर्य-वृद्धि के काल में आर्य-वृद्धि के विकास में आर्य-वृद्धि का महत्त्व निम्नलिखित कारणों से है -

note  
Phone  
email  
website

समाधान। उद्योगों पर दबाव गहरा एवं पक्ष की माया की समझना की न केवल सरकार की वल, उसे पक्ष के हितों का संरक्षण प्रभाव किया और उच्च संरक्षण प्रदान की इस युवा की जो इसी उद्योगीय विद्योपना है वह है हिंदी शब्दी शैली को आकरन समझ बनाना इसके लिए आचार्य द्विवेदी की वृद्ध संभव कराना पड़ा। माया का परिभाषा समाजशास्त्री का समाधान नो हो गया कि वह युवा माया समाज-की वृद्ध संरक्षणों को आनना हटारे की न श्रुतिमान है वृद्धों को रक्षणी की समझ है जो वृद्ध वर और संलग्न से जुड़ी समझने हैं। लगाना है इसके लिए किसी दूसरे मध्यम-वर्ग वृद्धों को आना होगा।

उद्योगों के आगमन से देखा की शिक्षा, जोवनशैली, आजीविका, निवृत्त एवं वंश-परिचय में महत्त्वपूर्ण बदलाव आया। इसके इसके अलावा भारतीय-कौशल द्वारा आधुनिक होने वाले उद्योगों के प्रति शिक्षण समाजों को संरक्षणों का संरक्षण भारतीय जीवन पर प्रभाव पड़ा। मही कारण है कि साहित्य में सामाजिक विषयों पर वृद्ध जाति एवं वर्ण व्यवस्था पर विद्युत संलग्न तथा निवृत्त में वैज्ञानिक दृष्टिकोण - रूपरेखा परिष्कृत होने हैं। जो वृद्ध वृद्ध शैली वर्णों को इसके पूर्व साहित्य में नहीं विद्यमान थी थी। आचार्य द्विवेदी ने इन समस्त परिवर्तनों को न केवल लागू किया वरु उच्च आत्मिकता भी दी। सामाजिक-संरक्षण पत्रिका के माध्यम से आसंख्य लोगों को साहित्य के क्षेत्र में जुड़ने का आह्वान भी किया। समाजशास्त्रीय द्विवेदी युवा आधुनिक हिंदी साहित्य की वृद्ध-गी है जिससे हिंदी साहित्य का महत्त्व बढ़ा है।